BA Sem 4

निर्विकल्पक,सविकल्पक एवं प्रत्यभिज्ञा

एक अन्य दृष्टिकोण से प्रत्यक्ष के तीन भेद होते हैं:- निर्विकल्पक,सविकल्पक और प्रत्यभिज्ञा। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष उस प्रत्यक्ष को कहते हैं जिसमें वस्तु के अस्तित्व का आभास मात्र होता है। इसमें हमें वस्तु के विशिष्ट गुणों का ज्ञान नहीं होता। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि निर्विकल्पक प्रत्यक्ष केवल वस्तु के स्वरूप को ग्रहण करने वाला ज्ञान है। यह ज्ञान नाम जाति आदि से रहित हैं जैसे जब हम किसी काम में व्यस्त रहते हैं और यह ज्ञान हमें प्राप्त होता है कि कोई कमरे के पास से निकला है किंतु इस ज्ञान के अतिरिक्त कुछ भी विशेष ज्ञान हमें नहीं होता की गुजरने वाला वस्तु क्या है उसका स्वरूप कैसा है आदि।

इसके विपरीत सविकल्पक प्रत्यक्ष वस्तु का निश्चित और स्पष्ट ज्ञान ज्ञान ज्ञान है। इसमें वस्तु के अस्तित्व के साथ-साथ उसके उसके गुणों का भी ज्ञान होता है होता है भी ज्ञान होता है होता है ज्ञान होता है जैसे टेबल पर पड़े पुस्तक को देखकर होने वाला ज्ञान का ज्ञान का सविकल्पक प्रत्यक्ष का उदाहरण है क्योंकि इसमें वस्तु अर्थात पुस्तक के साथ-साथ वह दर्शन शास्त्र शास्त्र की पुस्तक है का भी ज्ञान ज्ञान हमें होता है सविकल्पक प्रत्यक्ष निर्णयात्मक है। अतः इसके संबंध में सत्यता और असत्यता का प्रश्न उठता है।

निर्विकल्पक और सविकल्पक के संबंध में भारतीय दार्शनिक परंपरा में अनेक मत मतान्तर हैं। आचार्य भर्तृहरि का कहना है कि संसार में कोई भी ऐसा ज्ञान नहीं जो शब्द के माध्यम से अभिव्यक्त ना हो सके हो सके। शब्द रहित ज्ञान की सत्ता नहीं है। अतः निर्विकल्पक ज्ञान असंभव है है। इसके विपरीत बौद्ध दर्शनिक मानते हैं कि निर्विकल्प ही यथार्थ प्रत्यक्ष है है है। धर्मकीर्ति ने बतलाया है कि यथार्थ नामधारी नहीं है जो नामधारी है वह प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। कुमारिल भट्ट निर्विकल्प तथा सविकल्पक दोनों प्रत्यक्ष को स्वीकार करते हैं। अद्वैत वेदांत में निर्विकल्पक को ही यथार्थ प्रत्यक्ष माना गया है। रामानुज भी मानते हैं कि पहले निर्विकल्पम ज्ञान प्राप्त होता है और फिर गुण संस्थान आदि के साथ होने वाला ज्ञान सविकल्पक ज्ञान है। प्रत्यभिज्ञा का अर्थ है पहचानना। भूतकाल में देखी हुई वस्तु देखी हुई वस्तु को वर्तमान काल में पुनः देखने पर यदि हम पहचान जाते हैं तो उसे प्रत्यभिज्ञा कहते हैं। कुछ विद्वान प्रत्यभिज्ञा को सविकल्पक प्रत्यक्ष का एक विशेष रूप मानते हैं।प्रत्यभिज्ञा की यह विशेषता रहती है कि इसमें अतीत और वर्तमान का समन्वय रहता है।